पाठ 18
दीप से दीप जले

● **डॉ. उषा यादव**

आइए, सीखें : पॉलिथीन के प्रयोग से होने वाली हानियों की जानकारी। पॉलिथीन के उपयोग के विरोध में जन मानस तैयार करना।

दोपहर का समय था। सूरज आग उगल रहा था। ऐसे विषम मौसम में धूप और गर्मी की परवाह किए बिना तेरह चौदह साल का एक लड़का पीठ पर भारी बैग लादे धीरे-धीरे पैदल चला जा रहा था। सूरत से लड़का सीधा और संकोची दिखाई दे रहा था। उम्मीद भरी आँखों से वह सड़क के दोनों तरफ बनी कोठियों की तरफ देखता और फिर अपने सूखे ओठों पर जीभ फेरता हुआ आगे बढ़ जाता। किसी भी बंद दरवाजे को खटखटाने की उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी।

अचानक लड़के की आँखे चमक उठीं। एक मकान का दरवाजा खुला हुआ दिखाई दिया। वहाँ खड़ी एक महिला के पास जाकर बोला-''सुनिए आंटी, आपके यहाँ.....''

बेचारे लड़के की बात पूरी तक नहीं हुई। महिला दरवाजा बंद करते हुए भौहों पर बल डालकर तेज आवाज में बोली-''नहीं, नहीं हमें कुछ नहीं चाहिए। हम लोग बाजार से ही सारा सामान खरीदते हैं।''

लड़के का चेहरा उतर गया-''प्लीज, एक मिनट ठहरिए तो, मेरी बात तो सुन लीजिए, आंटी।''

रमा को बड़ी झुंझलाहट हुई। अजीब है यह लड़का भी। पीछे पड़ गया। इस तरह घर-घर घूमकर सामान बेचने वाले लड़को से कई बार ठगी जा चुकी है वह। इसीलिए अब उनसे कोई चीज नहीं खरीदती। पर.....

''आपके यहाँ एक गिलास पीने का पानी मिल सकेगा?'' लड़के ने कुछ झिझकते हुए, पर झटपट अपनी बात कह दी।

''पानी, अरे पानी तो जरूर मिलेगा। एक मिनट ठहरो''। कहते हुए रमा अन्दर चली गई। एक गिलास पानी लाकर उसने लड़के को थमा दिया। जितनी देर लड़का पानी पीता रहा, वह गौर से उसे देखती रही। पानी पीकर धन्यवाद देते हुए लड़के ने गिलास लौटा दिया, और बैग उठाकर वह चलने को हुआ, तो रमा बोली-''जरा ठहरो।'' लड़का रुक गया।

''कौनसा सामान बेचते हो तुम?'' रमा ने पूछा।

शिक्षण संकेत -

♦ दैनिक जीवन में पॉलिथीन के उपयोग पर चर्चा करते हुए कहानी प्रारंभ करें। ♦ पॉलिथीन के उपयोग से होने वाली हानियों की जानकारी दें। ♦ कठिन शब्दों के शुद्ध उच्चारण पर ध्यान दें। ♦ कहानी का हाव-भाव के साथ वाचन करें।

''जी–कुछ नहीं।''

''ऐं''.....रमा चौकी–''तो फिर मुझे क्यों रोक रहे थे? सिर्फ पानी माँगने के लिए।''

''जी नहीं।'' लड़के ने अपनी बड़ी–बड़ी आँखे उठाकर पहली बार रमा की ओर देखा।

''पहेलियाँ मत बुझाओ। साफ–साफ कहो। बात क्या है?'' रमा गंभीर हो उठी।

''मुझे आपसे एक जरूरी बात पूछनी थी। क्या आपके यहाँ बाजार से पॉलिथीन की थैलियों में सामान आता है?''

''हाँ, आता है! तुम्हें इससे क्या लेना–देना?''

''आजकल ज्यादातर दुकानदार पॉलिथीन की थैलियों में ही दाल–चावल साग सब्जी, फल, साबुन, टूथपेस्ट देते हैं। क्या आपके घर में ऐसा ही होता है?''

''हाँ, होता तो है।'' रमा को मानना पड़ा।

''आंटी, आपसे एक अनुरोध है, कहते हुए लड़का नीचे झुका। उसने जमीन पर रखे अपने भारी भरकम बैग के भीतर से कपड़े का सिला हुआ एक झोला निकाला और आगे बढ़ा दिया– ''प्लीज, बुरा न मानिएगा। आगे से अपने घर का रोजमर्रा का सामान इसमें रखकर लाया कीजिए।''

''क्यों''? रमा चौंक गई।

हमारे मोहल्ले में तीन–चार दिन पहले एक गाय मरी हुई पाई गई थी। आंटी, लोगों का अनुमान था कि इसे किसी ने जहर दे दिया है। किन्तु जब गाय का पोस्टमार्टम किया गया तो आप जानती हैं, गाय क्यों मरी थी?

''ऐं, नहीं तो'' रमा हड़बड़ा गई।

लड़के के ओठों पर उदास मुसकान दौड़ गई, ''गाय किसी के जहर देने से नहीं मरी थी। कूड़े के ढेर पर पड़ी पॉलिथीन की थैलियों को उसने खा लिया था। वे पेट के भीतर जाकर उसकी आँतों में फँस गईं और वह मर गई।''

एक बार फिर गौर से उसने उस बच्चे की ओर देखा। भोला–भाला बच्चा, गोरा रंग, सुन्दर नाक–नक्श, चमकती आँखें।

''आप क्या सोचने लगी, आंटी? '' लड़के ने टोका।

''कुछ नहीं। तुम्हारा नाम क्या है बेटे? किस कक्षा में पढ़ते हो?''

''जी मेरा नाम नितिन है आठवी कक्षा में पढ़ता हूँ।''

''जीव-जंतुओं के लिए कितनी दया है तुम्हारे मन में।''

''बात सिर्फ जीव-जन्तुओं की नही है।'' नितिन गंभीर होकर बोला-''यह पॉलिथीन तो वैसे भी हमारे पर्यावरण के लिए बहुत नुकसानदेह है। आप तो जानती ही है कि ये पॉलिथीन की थैलियाँ.....।''

रमा को अपने आप पर लज्जा हो आई। छि: इतनी बड़ी और समझदार होकर भी जिस बात की गंभीरता उसने आज तक नहीं समझी, उसे इतने छोटे से बच्चे ने कैसे समझ लिया? सचमुच ये पॉलिथीन की थेलियाँ हमारे पर्यावरण की सुरक्षा की दृष्टि से बहुत घातक हैं। जमीन का उपजाऊपन नष्ट करके यह उसे बंजर बना रही हैं। जलाने पर इनसे निकलने वाला विषैला धुआँ हमारे वायुमण्डल को जहरीला बना रहा है। ये थैलियाँ घर की मोरियों और नदी-नाले में जाकर पानी का बहाव रोकती हैं। जानवर के पेट में जाकर उनके प्राण ले लेती हैं, फिर भी हम बाजार से सारा सामान इन्हीं थैलियों में लाना पसंद करते हैं। हम अपनी छोटी सी सुविधा के लिए पर्यावरण को कितना दूषित कर रहे हैं।

''आपको मेरी बात अच्छी नहीं लगी, आंटी?'' रमा को सोचती हुई पाकर नितिन ने पूछा। रमा ने कहा ''तुम बहुत समझदार हो बेटे। तुम्हारे दिए हुए इस कपड़े के झोले में ही आज से मैं अपना समान लाया करूँगी।'' रमा ने हाथ बढ़ाकर झोला थाम लिया।

नितिन की आँखों में आभार का भाव छलक आया और नितिन प्रसन्न हो गया।

''तुम्हारे बैग में इतने सारे झोले कहाँ से आए? ''रमा ने कोमल आवाज में पूछा।

''बताऊँ आंटी?'' नितिन मुसकुराया, ''माँ के पास पुराने कपड़ों का ढेर था। उनके बदले वे कोई बर्तन लेना चाहती थीं। मैंने माँ से कहा कि बर्तन लेने के बजाय वह मुझे इन कपड़ों से झोले सिलकर दे दे, और यही इस बार मेरे जन्म दिन का उपहार रहेगा।''

''ऐसा अनोखा उपहार तुम्ही माँग सकते थे बेटा, ''रमा रीझ गई।

''मैंने संकल्प किया है कि इन झोलों को मैं ज्यादा से ज्यादा घरों में पहुँचाऊँगा। पॉलिथीन की थैलियाँ खाकर अब कोई गाय नहीं मरनी चाहिए, है न आंटी।''

''हाँ बेटे! ऐसे ही समझदार बच्चों की आज देश को जरूरत है।'' रमा भाव-विभोर हो उठी। अपनी प्रशंसा सुनकर नितिन शरमा गया।

''लेकिन इतनी कड़ी धूप में घर से मत निकला करो बेटे। कहीं बीमार पड़ गए तो परेशानी हो जाएगी,। ''रमा ने प्यार से समझाया।

''मजबूरी है आंटी। सुबह मैं स्कूल जाता हूँ। शाम को होमवर्क करता हूँ। दोपहर का यही समय मेरे पास खाली रहता है।''

''अब इस दीप से और सैकड़ों दीप जलाने की जिम्मेदारी हम सभी की है।''

''जी कैसे?'' नितिन कुछ समझा नहीं।

''पुराने कपड़ों का ढेर मेरे यहाँ भी है। मैं उनसे झोले तैयार करके अपनी कॉलोनी के घरों में पहुँचाऊँगी। जिस तरह तुमने मेरे भीतर पर्यावरण के लिए चेतना जगाई है, मैं भी उसी तरह दूसरों में जगाऊँगी। देखना, बहुत जल्दी हमारे पूरे शहर में पॉलिथीन की थैलियों का इस्तेमाल बंद हो जाएगा।''

''सच आंटी!''

''बिल्कुल सच बेटे,'' रमा मुस्कराई।

''और यह सिर्फ शुरुआत है। धीरे-धीरे दीप से दीप जलने की प्रक्रिया समूचे देश में फैल जाएगी। पर्यावरण की शुद्धता के लिए देश का हर नागरिक जाग उठेगा। कितना सुखद होगा तब!'' नितिन की आँखों में एक चमक दौड़ गई। अनगिनत दीप उसकी आँखों में झिलमिला उठे थे।

नए शब्द

विषम = भीषण, असहनीय। **विषैला** = जहरीला। **उम्मीद** = आशा। **दूषित** = खराब। **झुंझलाहट** = चिड़चिड़ाहट। **संकल्प** = इरादा। **अनुरोध** = निवेदनभाव। **विभोर** = भावुक मुग्ध, भावों से भरकर। **पोस्टमार्टम** = चीरफाड़। **चेतना जगाना** = सावधान करना, सचेत करना। **घातक** = हानिकारक। **प्रक्रिया** = तरीका, कार्य विधि। **बंजर** = ऊसर, अनुपजाऊ **सुखद** = आनंददायक।

अनुभव विस्तार

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न-**

(क) सही जोड़ी बनाइए -

पॉलिथीन	कपड़े के झोले में रखकर लाया कीजिए।
ज्यादातर दुकानदार	जानवरों के पेट में जाकर उनके प्राण हरलेती हैं।
अपने घर का रोजमर्रा का सामान	पॉलिथीन की थैलियों में ही दाल-चावल, साग-सब्जी, फल, साबुन, टूथपेस्ट देते है।
पॉलिथीन की थैलियाँ	हमारे पर्यावरण के लिए बहुत नुकसानदेह है।

(ख) सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

(अ) सूरज .....उगल रहा था। (पानी, आग)

(ब) .....की थैलियाँ खाकर अब कोई गाय नहीं मरनी चाहिए।
(पॉलिथीन, कागज)

(स) अब इस दीप से और.....दीप जलाने की जिम्मेदारी हम सभी की है।
(सैकड़ों, हजारों)

(द) अनगिनत .....उसकी आँखों में झिलमिला उठे। (तारे, दीप)

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

(अ) नितिन के बैग में क्या भरा था?

(ब) जलाने पर पॉलिथीन से कैसा धुआँ निकलता है?

(स) नितिन दोपहर में ही क्यों गया था?

(द) नितिन ने रमा को क्या सलाह दी?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न-

(अ) पॉलिथीन की थैलियाँ पर्यावरण को कैसे प्रभावित करती हैं?

(ब) नितिन ने जन्मदिन पर कौन सा उपहार चाहा और क्यों?

(स) नितिन की बात सुनकर रमा ने कौन सा संकल्प लिया?

(द) नितिन को पर्यावरण प्रदूषण के विरूद्ध अभियान चलाने की प्रेरणा कैसे मिली?

(ई) 'दीप से दीप जले' से लेखिका का क्या आशय है?

भाषा की बात-

1 बोलिए और लिखिए-

विषम, पर्यावरण, वायुमण्डल, विषैला

2 सही वर्तनी वाले शब्दों को कोष्ठक में लिखिए-

अनूराधा, अनुरोध, अनुरोधा, अनुरौध ( )

धुआँ, धूआँ, धुँआ, धुआ ( )

दुषित, दूषित, दूशित, दूसित ( )

ठेहरिये, ठहेरिए, ठहरिये, ठहरिए ( )

3 निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी रूप लिखिए–

प्लीज, पोस्टमैन, होमवर्क, आंटी, प्रिंसीपल

4 निम्नलिखित शब्दों में से एक शब्द का अर्थ असमान है। असमान शब्द पर गोला लगाइए–

सूरज	–	सूर्य, रवि, भानु,पयोधर
आग	–	अग्नि, अनिल, पावक, अनल
आँख	–	नग, नयन, नेत्र, लोचन
घर	–	गृह, आवास, सदन, सिन्धु

5 विलोम शब्दों को चुनकर जोड़ी बनाइए–

विषम	–	दु:खद
खरीदना	–	असुरक्षा
प्रशंसा	–	सम
सुरक्षा	–	निंदा
सुखद	–	बेचना

6. उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों में 'दार' प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए–

मूल शब्द	**प्रत्यय**	**नया शब्द**
दुकान	दार	दुकानदार
समझ		.....
ईमान		.....
जोड़ी		.....
दम		.....
फल		.....
छाया		.....

7 **निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए –**
सूरज, धुआँ, आग, गर्मी

अब करने की बारी

1. अपने– अपने घर में पॉलिथीन के उपयोग को रोकने के लिए कुछ उपाय सोचिए और अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

2. हमारे द्वारा ऐसे अनेक कार्य किये जाते हैं जिनसे पर्यावरण प्रदूषित होता है। उन कार्यों की सूची बनाइए तथा इन्हें दूर करने के उपायों पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

3. विश्व पर्यावरण दिवस पर अपने विचार कक्षा अथवा बालसभा में सुनाइए।

4. सबके घर में पुरानी अनुपयोगी चीजे होती हैं। नितिन की तरह अपने–अपने घरों की अनुपयोगी वस्तुओं का ऐसा उपयोग कीजिए, जिससे घर और बाहर का प्रदूषण कम हो।